तिश्नगी

गज़लें व कविताएँ

आशीष राज सिंघानियॉ तन्हा

Publishing-in-support-of,

FSP Media Publications

RZ 94, Sector - 6, Dwarka, New Delhi - 110075
Shubham Vihar, Mangla, Bilaspur, Chhattisgarh - 495001

Website: *www.fspmedia.in*

© Copyright, Author

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

ISBN: 978-93-6026-786-5

Price: ₹ 180.00

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Publisher.

Printed in India

ॐ साई राम

Special Thanks:

Book Introduction:
Janab Hasan Kazmi

Cover Page Photo:
Shweta Agrawal

Poet Introduction:
Hari Kedia

Editing Support:
Deepti Raje Singhania
Pratik Singhania

Inner Pages Photo Credit:
Mrinal Parihar
Pratik Singhania

My Valuable Advisors:
Vinod Sharma
Dhaal Singh Rajput

॥ श्री ॥

तिश्नगी

गज़लें व कविताएँ

आशीष राज सिंघानियाँ

'तन्हा'

EDUCREATION PUBLISHING
(Since 2011)
www.educreation.in

प्रेरणा

जिनकी गज़लें, जिनकी नज़्में,

जिनके गीत सुनकर मैंने खुद लिखना सीखा.

ऐसे महान लेखक,

हमेशा से मेरे आदर्श

गुलज़ार साहब

की कलम से एक नज़्म..

मुझसे एक नज़्म का वादा है,
मिलेगी मुझसे
डूबती नब्जों में
जब दर्द को नींद आने लगे
ज़र्द सा चेहरा लिए चाँद
उफ़क पर पहुँचे
दिन अभी पानी में हो
रात किनारे के करीब
न अँधेरा, न उजाला हो
यह न रात, न दिन
जिस्म जब खत्म हो
और रूह को जब साँस आए
मुझको इक नज़्म का वादा है
मिलेगी मुझको

शुक्रिया

मेरी जीवनसंगिनी 'दीप्ति',
मेरी दोस्त श्वेता,
मेरा ग्रुप गैंग ऑफ डफर्स
और मेरे तमाम मित्रों का
फिर से एक बार दिल से आभार.
आप सभी के प्यार, अपनेपन
व विश्वास ने ही मुझे
पढ़ने-लिखने का हुनर सिखाया
और यहाँ तक पहुँचाया.

समर्पण

यह किताब

मेरी पूज्य दादीजी

स्व. तारादेवी जी सिंघानियॉ

एवं

हमेशा से मेरे आदर्श

गुलजार साहब

को सादर समर्पित है.

– आशु

खुबसूरत हैं आँखें तेरी
रात को जागना छोड़ दे,
खुद–ब–खुद नींद आ जायेगी
तू मुझे सोचना छोड़ दे.

– हसन काज़मी साहब

प्रस्तावना

मैं तो पहली मुलाकात में ही जनाब का कायल हो गया. मुझे बेहद मोहब्बत हो गयी आशीष से व इनकी सादगी से, इनके लहजे से व इनके सलीके से और हिन्दी व उर्दू से इनके रूहानी ताल्लुक़ात से. सच पूछो तो किसी भी नजरिये से आशीष इतने दर्दमंद लगते नहीं, जितने कि वाकई वो हैं. बड़े ही भले किस्म के संजीदा से राईटर हैं जो बेहद छोटे-छोटे एहसासों को भी अल्फ़ाजों में पिरोना जानते हैं. मैंने इनकी पहली किताब 'तन्हाई – इश्क़ का हासिल' कई बार पढ़ी, मुझे इनकी हर एक ग़ज़ल अपने दिल के बेहद करीब महसूस हुई. हर एक अल्फ़ाज मुझे दर्द में डूबा सा नजर आया. बेहद सुकून व फ़क्र महसूस होता है आशीष जैसे युवा दोस्तों की उर्दू मोहब्बत और उर्दू इबादत देखकर. यूँ लगता है कि गंगा-जमुनी तहजीब के नए झंडाबरदार अभी जिंदा हैं और यह सफर बेहद मुकम्मल तरीके से बेशक ताकयामत जारी रहेगा.

यह दूसरी किताब है जनाब की और इसके बाद कई और तैयार होकर कतार में अपनी बारी का इंतजार कर रहीं हैं. 'तिश्नगी', जैसा कि नाम से ही जाहिर है, कुछ अधूरी ख़्वाहिशों को समेटे हुए है खुद में, अफसोस की बानगी देखिए..

''मैं तो था झुका, तू अड़ा रहा
तेरे दर पे भीं, तो खड़ा रहा
मेरी चाहतों की तो, हद ये है
तू खुदा से भीं, तो बड़ा रहा
कटा जड़ से मैं, टूटा साख से
सूखे पत्तों सा, मैं पड़ा रहा
तुझे पाने की, इस कश्मकश में
मेरा खुद से ही, झगड़ा रहा''

आशीष ने तमाम एहसासों को बड़े करीने से अपनी कविताओं, गज़लों व नज़्मों में पिरोया है. मैं दाद देता हूँ उनके अंदाज का, उनके ख़यालात का व दर्द को बयाँ करने के हौसले का. यकीनन वो अपनी जिंदगी में बहुत ऊँचाइयों तक जाएँगे व पूरे कायनात में खूब सोहरत भी कमाएँगे.

मेरी दुआ है कि उनका दर्द यूँ ही अल्फ़ाज बनकर छलकता रहे और हम सबको बेहतरीन गज़लों व नज़्मों का जखीरा लूटने का मौका बार-बार मिलता रहे.

''वो बरसता रहे, न तरसता रहे

गम-ए-इश्क़ से उसका रिश्ता रहे

थोड़ा वो भी जी ले, थोड़ा हम भी जी लें

उसके दामन से दर्द रिसता रहे''

शुक्रिया.. खुदा हाफिज़!

***– हसन काज़मी** (लखनऊ)*

लेखक परिचय

नमस्कार!

बड़ा फ़क्र सा महसूस होता है किसी के संघर्ष और फिर सफलता का गवाह बनना, अब देखिए न कल तक का एक शौकिया लेखक आज वाकई एक स्थापित गीत और ग़ज़लकार बनने की कगार पर है. आशीष भाई के साथ यूँ तो काम करने का मजा व तजरूबा बयाँ कर पाना बेहद मुश्किल है, हाँ पर एक मुश्किल जरूर आप सभी के साथ साझा करना चाहूँगा, वो ये कि रात को दो बजे भी उनींन्दे इनका फोन आ सकता है, न खुद आराम करते हैं न हम शागिर्दों की परवाह करते हैं. खैर इनकी इसी ऊर्जा से ही हमें भी कुछ नया और बड़ा करने का हौसला मिलता है.

वाकई इतनी जल्दी–जल्दी इतना कुछ कैसे सोच लेते हैं, कैसे इतना बेहतर लिख लेते हैं, कभी–कभी तो मुझे खुद भी सोचना पड़ जाता है. ऐसा कोई दिन नहीं जब हमारी मुलाकात न होती हो, गज़लों व नज़्मों को लेकर घंटों बात न होती हो. कुछ भी लिखते हैं, सबसे पहले मेरे मोबाईल की घंटी बजती है, मैं भी आजकल फोन उठाते ही 'दादा सुनाओ' ही बोलता हूँ.

जिसके जख़ीरे में लगभग 500 से ज्यादा गीत, गज़ल, नज़्म, शायरियाँ, मुक्तकें व कविताएँ हैं, जो आज देश के कई हिस्सो में एक जाना–पहचाना व पसंद किए जाने वाला नाम है. जिसकी एक किताब आ चुकी और छा चुकी, दुसरी आपके हाथों में है, तीसरी व चौथी तैयार है और लगभग दो और किताबें भी मुकम्मल होने के कगार पर है. अब बताइये किसे फक्र न हो ऐसी शख़्सियत के साथ काम करके.

मेरी खुशकिस्मती है कि इस बार भी उनकी किताब का दो कीमती पेज मुझे काला करने दिया गया. सोचा तो बहुत कुछ था लिखना, पर जब लिखने बैठा तो सोचा हुआ कुछ काम न आया.

मैंने उनके जन्म, बचपन, तालीम और वर्तमान जिंदगी के तमाम पहलुओं से आपको उनकी पहली किताब 'तन्हाई' में रूबरू करवाया था, फिर से उन्हीं बातों को यहाँ दोहराना मुझे मुनासिब नहीं लग रहा. पर एक बात तो मैं जरूर कहना चाहूँगा कि अगर आपने 'तन्हाई' नहीं पढ़ी है, तो पहली फुरसत में जरूर पढ़ें. मोहब्बत, दर्द व अकेलेपन का जबरदस्त बयाँ है.

'तिश्नगी' अब आपके मुबारक हाथों में है, जरा गौर से लिजीएगा हर एक अल्फ़ाज को, यकीनन आप भी मोहब्बत करने लगेंगे जनाब के दर्द से. चलिए अब रूख़सत होने का वक्त हो चला है, पर शायद ज्यादा दिनों तक नहीं, क्यूँकि जिस तेजी से वो जा रहें हैं जल्द ही फिर आपकी और मेरी मुलाकात होगी, एक नई किताब के साथ, एक जोड़े नए पन्नों के साथ. तब तक के लिए अलविदा!

आशीष भाई की 'तिश्नगी' की एक छोटी सी झलक..

''सब दफ़्न हुए अरमां सीने में
इश्क से अब हमको इश्क न रहा,
तुझे चाहना बीते कल की बात है
बीते कल से अब हमको इश्क न रहा.''

बहुत शुक्रिया!

– हरि कोडिया (थानखम्हरिया)

अपनी बात

मित्रों,

अभिवादन!

आप सभी से एक बार फिर मुख़ातिब हूँ, पिछली बार 'तन्हाई' के और इस बार 'तिश्नगी' के जरिए. आप सभी की मोहब्ब़त ही है जो इतना कुछ सोचने की, इतना कुछ लिखने की और बार–बार छपने की हिम्मत दे रहा है. सच कहूँ तो मेरे लिए ये सब एक ख़्वाब की तरह ही है, जो अक्सर मैं देखा करता था अपनी जागती आँखों से, वरना तो इतनी जल्दी–जल्दी इतना सब कुछ हर किसी को कहाँ नसीब होता है. मुझ नाचीज को आप सब ने ही आसमान की ऊँचाई दी है, जिसके लिए यकीनन मैं ताउम्र आप सभी का शुक्रगुजार रहूँगा.

मेरी पहली किताब 'तन्हाई' को आप सभी ने इतना प्यार दिया, उसको मेरे प्रकाशक का 'बेस्टसेलर बुक' बनाया, इसके लिए भी आप सभी का शुक्रिया. अभी आपके हाथों में मेरी नयी किताब 'तिश्नगी' है, जो मेरी लिखी एकदम नयी ग़ज़लों व कविताओं का एक नायाब संग्रह है. इसमें आपको कई तरह की पूरी तीस रचनाएँ पढ़ने को मिलेंगी, पिछली किताब 'तन्हाई' में भी इतनी ही हिन्दी व उर्दू की ग़ज़लें थी.

इस किताब में मैंने कोशिश की है कि बहुत आसान शब्दों में अपनी बात, अपने ज़ज़्बात, आप सब तक पहुँचा सकूँ. आम बोल–चाल की भाषा के साथ उर्दू के बहुत प्रचलित शब्दों का ही उपयोग करने का प्रयास मैंने किया है. शायद इस किताब की हर एक गजल या कविता आपको अपनी रोज की जिंदगी का एक एहसास ही लगे और अगर ऐसा हुआ तो फिर मुझे लगेगा की मेरी कोशिश हकीकत में कामयाब रही, मेरा लिखना कारगार रहा, मैं आपके और मेरे हालात को पुरसुकून ढंग से पेश कर सका.

आप सभी को ये जानकर शायद बेहद खुशी होगी कि लगातार मेरा लिखना जारी है और आपको नयी–नयी किताबें, गज़लें, नज़में व कविताएं पढ़ने को मिलती रहेंगी. मेरी कोशिश होगी की मैं अपने एहसासों, ख़्वाबों व कल्पनाओं को यूँ ही अल्फ़ाजों में पिरोता रहूँ और आप सब को एक से एक नायाब गीत–गज़ल का तोहफा देता रहूँ.

आप सभी की मोहब्बत यूँ ही मुझे मिलती रहेगी तो मुझे भी लिखने का मजा आता रहेगा. बस यही तमन्ना है कि आप सभी की मोहब्बत का हिस्सा मैं हमेशा बनता रहूँ और आप सभी की दुवाओं में मैं भी शामिल रहूँ.

''दिल में मेरे पल रहीं ये तमन्ना आज भी
एक समंदर पीं चुकूँ और तिश्नगी बाकी रहे''

शुक्रिया!
मेहरबानी!
करम!

– आशीष राज सिंघानियाँ 'तन्हा'

मेरी दुआ है कि आशीष का दर्द यूँ ही अल्फ़ाज बनकर छलकता रहे और हम सबको बेहतरीन गज़लों व नज़्मों का जख़ीरा लूटने का मौका बार-बार मिलता रहे.

– हसन काज़मी गज़लकार

आशीष में कविगुण स्पष्ट दिखते हैं, साहित्य साधना का ही नाम है. पूर्व कविताओं को देखते हुए मैं सविश्वास कह सकता हूँ कि यह निरंतरता कवि को एक मुकाम तक जरूर पहुँचाएगी.

– गिरीश पंकज उपन्यासकार

मैंने आशीष की पहली किताब 'तन्हाई' कई दफ़े पढ़ी, वाकई उन्होने दर्द व अकेलेपन को बड़ी मोहब्बत से बयाँ किया है.

– सुनील बिरमीवाल फिल्मकार

/poet.tanha

@poet_tanha

ars.poettanha

FSP
FSP MEDIA PUBLICATIONS

BOOK AVAILABLE
Flipkart
GET IT ON Google Play
amazon
amazonkindle

EBOOK AVAILABLE
ISBN 978-93-6026-786-5
9 789360 267865